सप्टेम्बर २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सच्चा आनंद

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः ६
अखंड क्रमांकः ५४
सप्टेम्बर २०१७

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपयें
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपयें
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

सच्चा आनंद

संपादकीय

बालमित्रों,

आनंद आनंद उभराय,
हैयु झाल्यु न झलाय
ज्ञानी संगे जीवननी
पल पल उल्लासे जाय...

हाँ, जीवन में ज्ञानीपुरुष मिलने के बाद, सच्चे आनंद की शुरुआत होती है। और सभी आनंद काल्पनिक आनंद हैं। जब ज्ञानीपुरुष आत्मा का ज्ञान देते हैं, तब स्वाभाविक आनंद उत्पन्न होता है।

सच्चा आनंद क्या है? वह कैसा होता है? उसका अनुभव कैसा होता है? वह ऐसा है कि उसका वर्णन सुनकर ही आनंद हो जाता है।

तो चलिए, हम उस आनंद के प्रपात की एक बूंद का अनुभव करते हैं।

–डिम्पल मेहता

दादा जी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : किसका शौक रखना चाहिए?

दादाश्री : आनंद का, हमेशा आनंद रहे, उसका शौक रखना है और जो थाली में आ जाए, उसे खाना-पीना और मौज करना। उसकी "ना" नहीं है।

ज्ञानी के दर्शन से आनंद

प्रश्नकर्ता : दुनिया में ऐसी कौन सी चीज़ है जो आनंद प्राप्त करवाए?

दादाश्री : "ज्ञानीपुरुष" को देखते ही आनंद होता है।

प्रश्नकर्ता : आपको सुनते ही हमें अपार आनंद होता है तो फिर आपको कितना आनंद होता होगा?

दादाश्री : मेरे अंदर जो आनंद है, आपके अंदर भी वही आनंद है, सभी में वही आनंद है। जिसका जितना पुरुषार्थ और जितना "ज्ञानी" का राजीपा (आशीर्वाद), जब ये दोनों मिल जाते हैं तो आनंद रहता ही है।

प्रश्नकर्ता : यानी? संपूर्ण आनंद कब आता है? सभी दोष (भूलें) चले जाने के बाद ही न?

दादाश्री : जीवमात्र के अंदर भरपूर आनंद भरा पड़ा है, लेकिन वह आनंद आना बंद हो गया है। क्योंकि जब कषाय, क्लेश, राग-द्वेष होते हैं उससे आत्मा पर आवरण आ जाते हैं और आनंद चला जाता है। क्रोध, मान, माया, लोभ की अनुपस्थिति ही आनंद है। संसारी आनंद आता है वह टेम्परेरी आनंद है। जैसे पिक्चर देखते हैं उतनी देर मज़ा आता है फिर वापस वही बोरियत। आनंद में थकान नहीं होती।

सच्चे आनंद का अनुभव

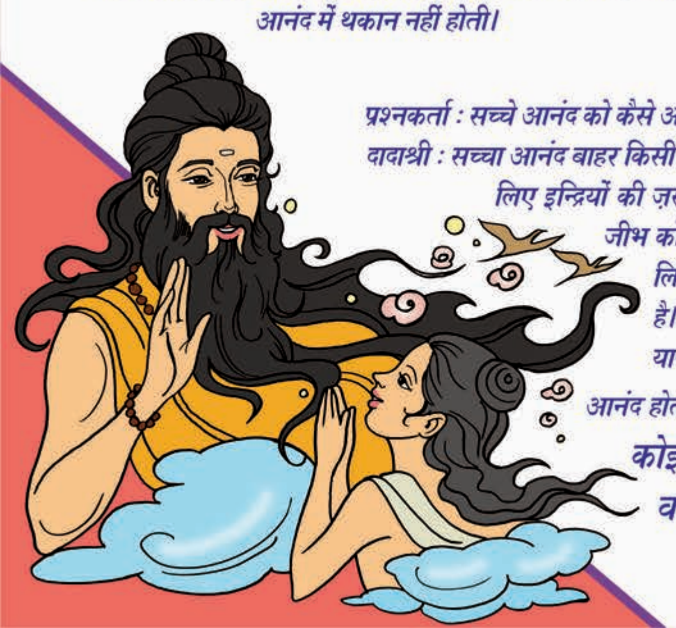

प्रश्नकर्ता : सच्चे आनंद को कैसे अनुभव कर सकते हैं?

दादाश्री : सच्चा आनंद बाहर किसी भी तरह से अनुभव नहीं किया जा सकता। बाहर के आनंद के लिए इन्द्रियों की ज़रूरत पड़ती है। जैसे टेस्टी खाना मिलने पर स्वाद की इन्द्रिय-जीभ को संतोष मिलता है तो आनंद होता है। लेकिन सच्चे आनंद के लिए इन्द्रियों की ज़रूरत नहीं है। सच्चा आनंद तो शाश्वत आनंद है। उसके लिए किसी भी चीज़ का आधार नहीं चाहिए। आधार यानी कोई मनपसंद चीज़ मिले या कोई तारीफ करे उससे जो आनंद होता है उसे आधार वाला आनंद कहते हैं। **सच्चा आनंद तो कोई अपमान कर जाए फिर भी आनंद नहीं जाए, वह सच्चा आनंद!!**

गाय के सींग पर राई का दाना रखने पर, वह जितनी देर टिकता है यदि उतनी देर आत्मा का आनंद चख लेंगे तो फिर वह नहीं जाएगा। सच्चा आनंद एक जैसा ही रहता है, बहुत तृप्ति रहती है, उस आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता।

यह तो

बुद्धि चले जाने के बाद आनंद बहुत बढ़ता जाता है। आनंद का धाम ही है लेकिन बुद्धि बीच में दखल करती है।

प्रश्नकर्ता : सभी को निर्दोष देखने में कैसा आनंद मिलता है?

दादाश्री : उस आनंद को मुक्ति का आनंद कहते हैं।

गहरी बात है!

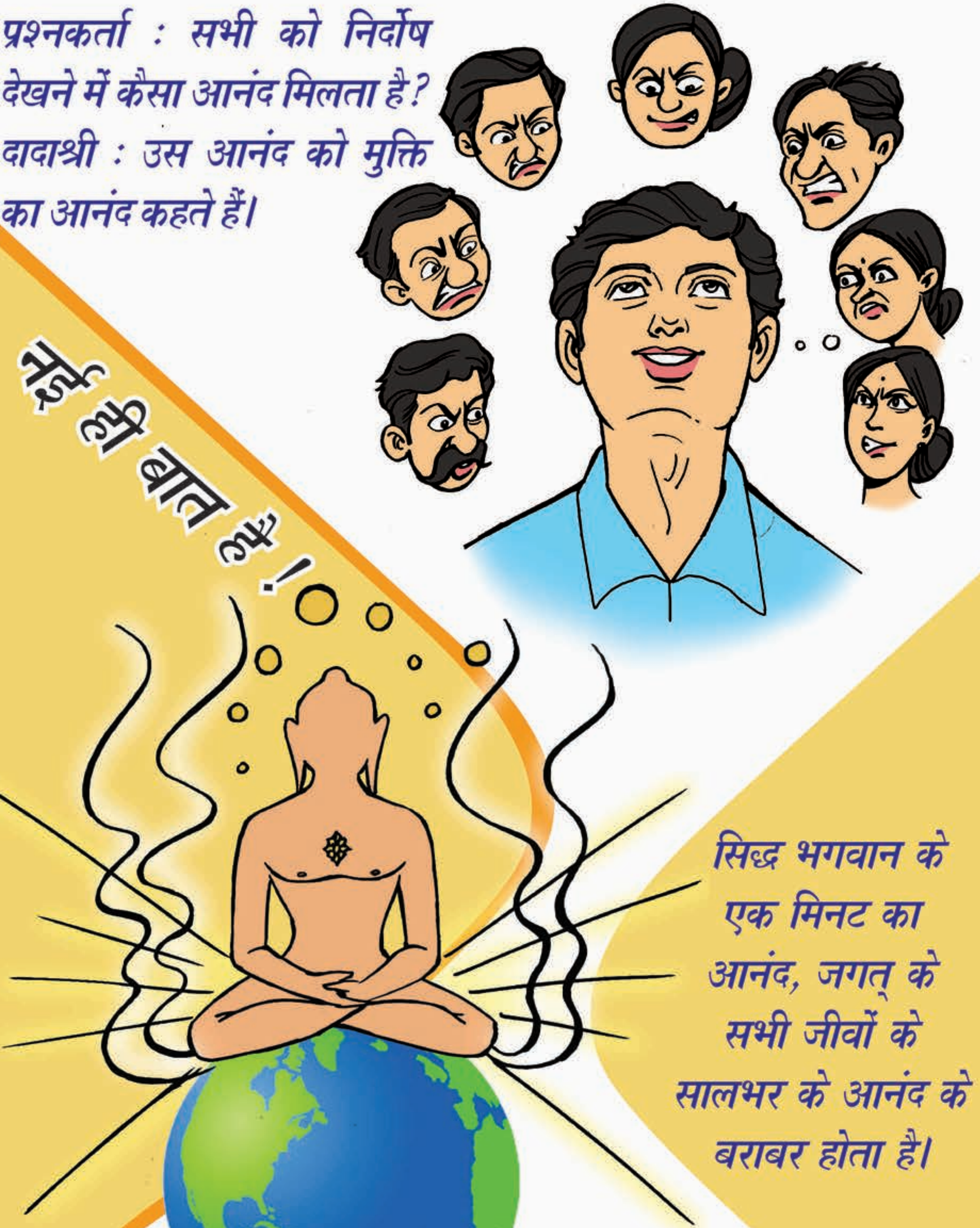

सिद्ध भगवान के एक मिनट का आनंद, जगत् के सभी जीवों के सालभर के आनंद के बराबर होता है।

सिंह की संतान

एक सुंदर सा वन था। एक दिन एक गर्भवती शेरनी वन में शिकार करने के लिए निकली।

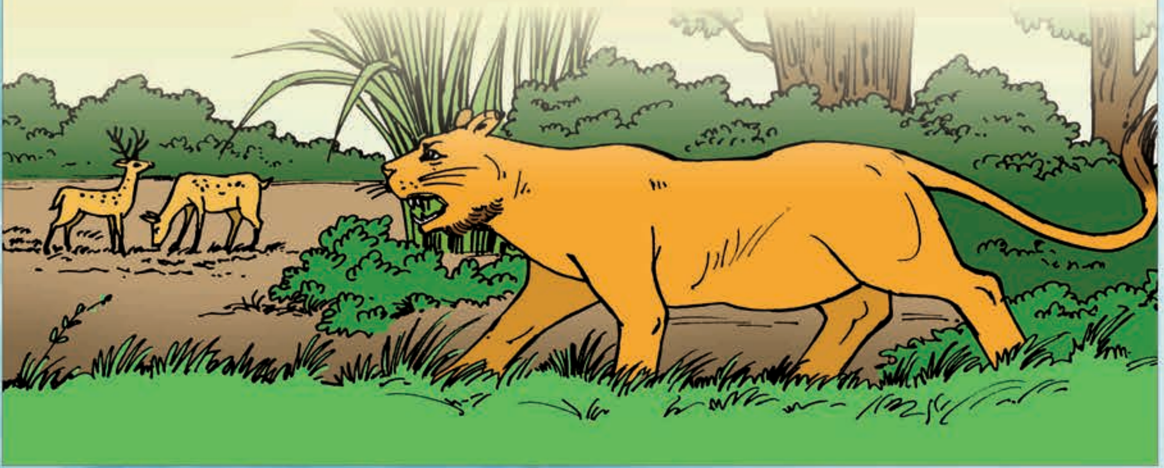

शिकार करते हुए, शेरनी का संतुलन बिगड़ गया और वह मर गई। उसी समय उसके गर्भ से शेर के बच्चे का जन्म हुआ।

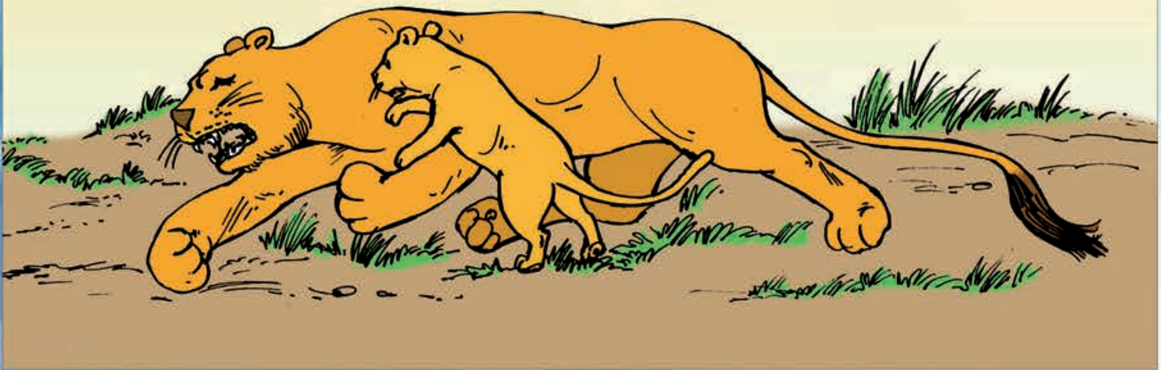

उसी समय भेड़ों का झुंड वहाँ से निकल रहा था। नए जन्मे हुए बच्चे को देखकर,
चलो इस बच्चे को हम अपने साथ ले लेते हैं। आज से उसके पालन-पोषण और देखभाल की ज़िम्मेदारी हमारी होगी।
भेड़ों के बीच शेर का बच्चा बड़ा होने लगा। बच्चे का नाम गोलू रखा गया।
बें बें...
अरे गोलू, तुझे भूख लगी है? चल हम घास खाने चलते हैं।
घास खाते-खाते गोलू दूर निकल गया।
गोलू उस तरफ मत जा। वहाँ सभी हिंसक प्राणी रहते हैं। वे हमें खा जाएँगे।
शेर का बच्चा तो भेड़ों के साथ रहकर घास खाता, बें बें करता और भेड़ों जैसा डरपोक बन गया था।

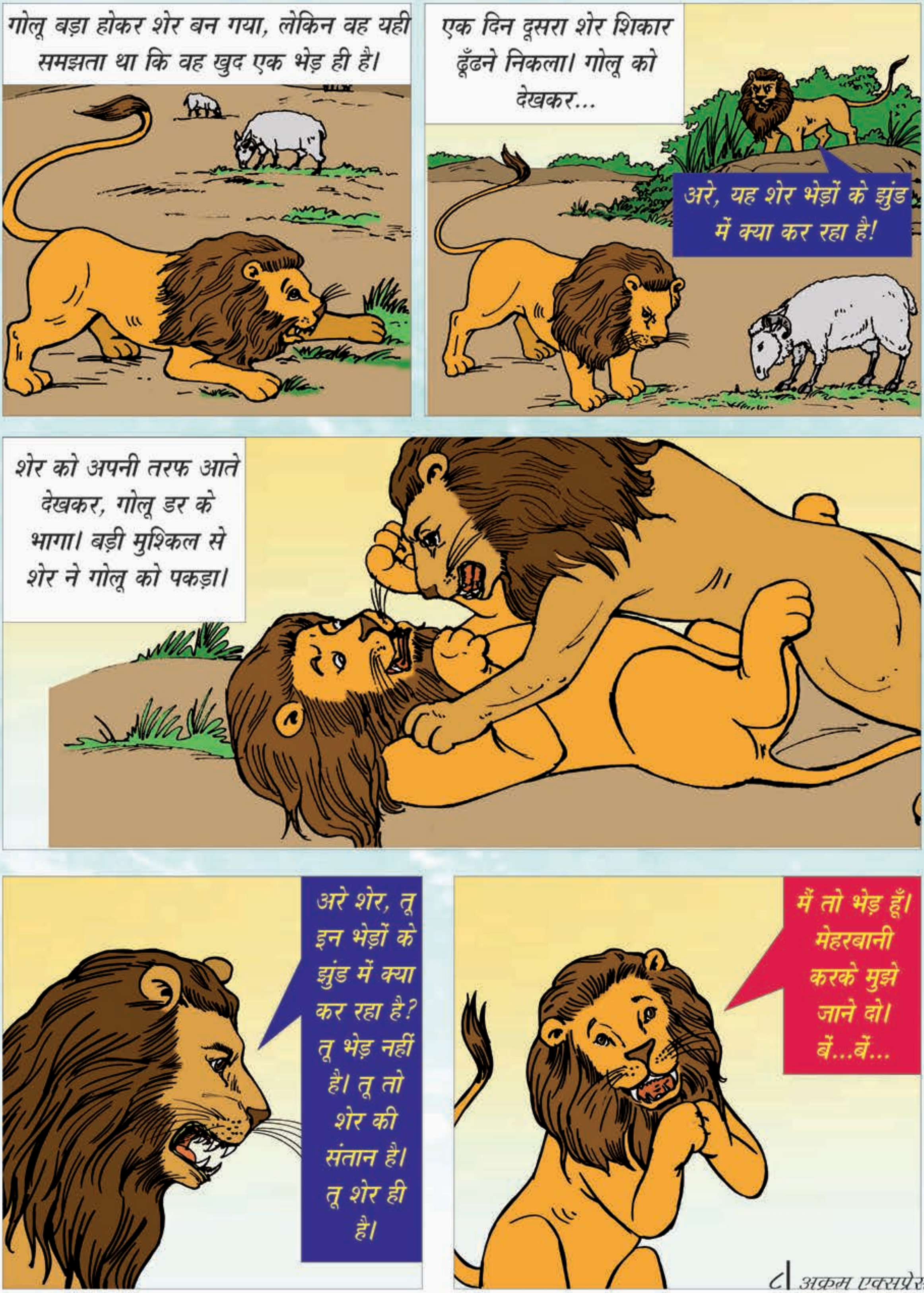
गोलू बड़ा होकर शेर बन गया, लेकिन वह यही समझता था कि वह खुद एक भेड़ ही है।
एक दिन दूसरा शेर शिकार ढूँढने निकला। गोलू को देखकर...
अरे, यह शेर भेड़ों के झुंड में क्या कर रहा है!
शेर को अपनी तरफ आते देखकर, गोलू डर के भागा। बड़ी मुश्किल से शेर ने गोलू को पकड़ा।
अरे शेर, तू इन भेड़ों के झुंड में क्या कर रहा है? तू भेड़ नहीं है। तू तो शेर की संतान है। तू शेर ही है।
मैं तो भेड़ हूँ। मेहरबानी करके मुझे जाने दो। बें...बें...

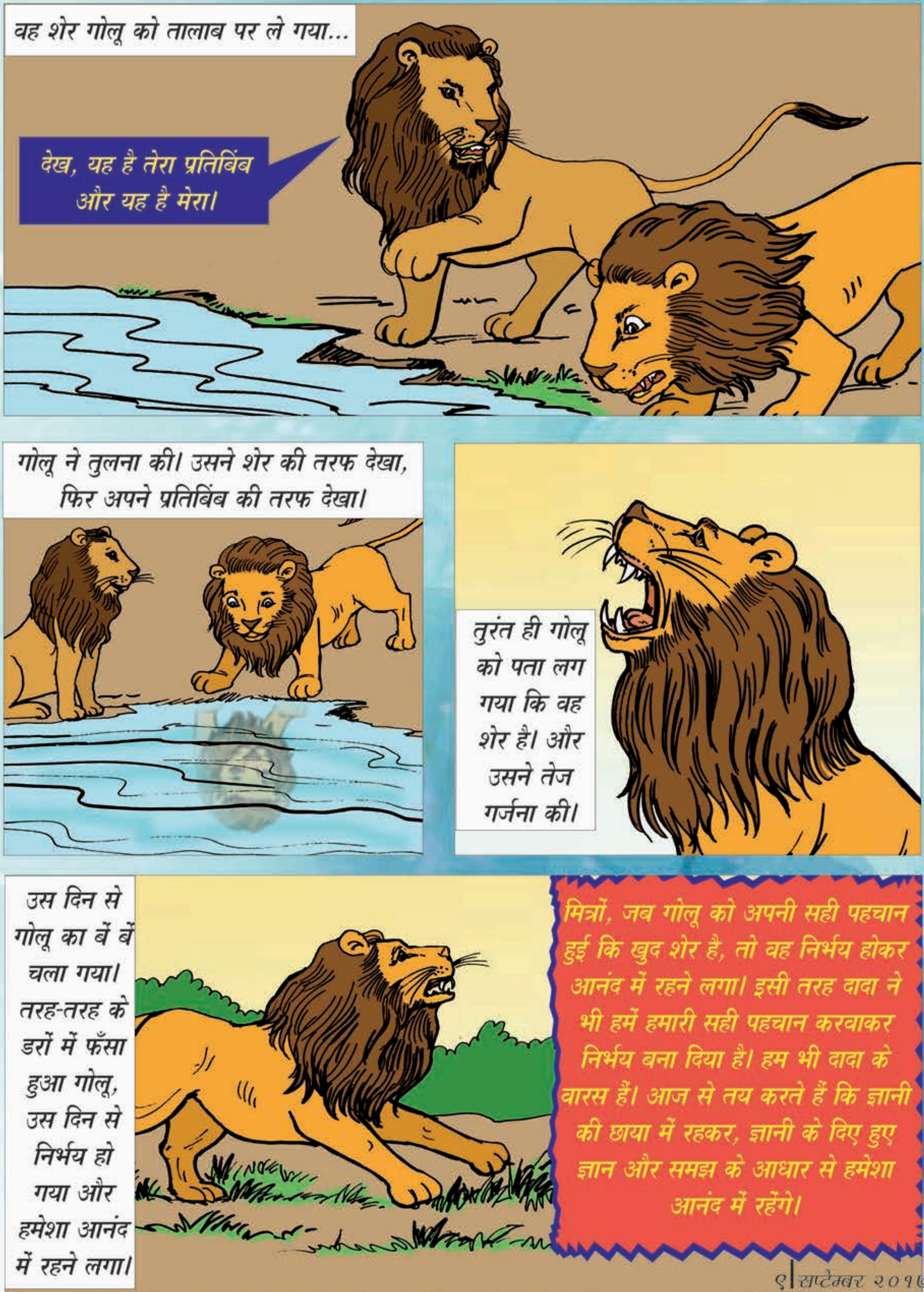

वह शेर गोलू को तालाब पर ले गया...
देख, यह है तेरा प्रतिबिंब और यह है मेरा।
गोलू ने तुलना की। उसने शेर की तरफ देखा, फिर अपने प्रतिबिंब की तरफ देखा।
तुरंत ही गोलू को पता लग गया कि वह शेर है। और उसने तेज गर्जना की।
उस दिन से गोलू का बें बें चला गया। तरह-तरह के डरों में फँसा हुआ गोलू, उस दिन से निर्भय हो गया और हमेशा आनंद में रहने लगा।
मित्रों, जब गोलू को अपनी सही पहचान हुई कि खुद शेर है, तो वह निर्भय होकर आनंद में रहने लगा। इसी तरह दादा ने भी हमें हमारी सही पहचान करवाकर निर्भय बना दिया है। हम भी दादा के वारस हैं। आज से तय करते हैं कि ज्ञानी की छाया में रहकर, ज्ञानी के दिए हुए ज्ञान और समझ के आधार से हमेशा आनंद में रहेंगे।

मरुत बहुत ही उत्साह में था।
स्कूल बस से उतरते ही
उसने घर की ओर दौड़ लगाई।
घर में घुसते ही उसने पापा
के हाथ में एक फॉर्म दिया

सच्चा

मरुत बहुत ही उत्साह में था। स्कूल बस से उतरते ही उसने घर की ओर दौड़ लगाई।

घर में घुसते ही उसने पापा के हाथ में एक फॉर्म दिया, "स्कूल में अगले हफ्ते क्रिकेट ट्रेनिंग क्लास शुरू होने वाले हैं। प्लीज़ इस फॉर्म को भरकर साइन कर दीजिए। फीस भी ज्यादा नहीं है। बॉल, बैट और अन्य चीज़ें तो वे लोग ही देंगे। ओ... आई एम सो एक्साइटेड।"

"बस...बस...बस...! बेटा, ज़रा रुक। पहले शांत होकर साँस लेले। और पानी पी ले।" मरुत के सिर पर हाथ फिराते हुए पापा बॉल, "दौड़कर आया है, अभी भी हाँफ रहा है। बैठकर बात कर।"

मरुत तुरंत बैठ गया। पास के टेबल पर बैग रखा। मम्मी का दिया हुआ पानी का गिलास, एक ही घूँट में गटगटा गया और फिर बोला, "ओके, अब बोलो न! पापा, मैं यह क्लास जॉइन करूँ न?"

मम्मी-पापा ने एक-दूसरे के सामने देखा और मरुत के पास बैठ गए।

पापा ने गंभीर स्वर में पूछा, "देखो बेटा, सवाल फीस का नहीं है लेकिन तुझे इसमें मज़ा आएगा उसका क्या भरोसा?"

मरुत तुरंत बोला, "मुझे बहुत मज़ा आएगा, मेरे दोनों फ्रेन्ड भी जाने वाले हैं।"

"लेकिन बेटा, जो उन्हें अच्छा लगता है वह तुझे भी अच्छा लगे ऐसा कैसे कहा जा सकता है? चेस क्लब में भी तूने अपने फ्रेन्ड के साथ ही नाम लिखवाया था न? क्या हुआ उसमें? चार दिन जाकर फिर जाना बंद कर दिया। शुरुआत में तू उसमें भी इतना ही एक्साइटेड था न!? जब कुछ नया शुरू करता है तब तू बहुत उत्साहित होता है और फिर कुछ ही दिनों में तेरा उत्साह गायब हो जाता है।" पापा ने मरुत को समझाने का प्रयत्न किया।

सुख कहाँ है?

मरुत ने आशाभरी नज़रों से मम्मी के सामने देखा और बोला, "लेकिन मम्मी चेस क्लब सचमुच बोरिंग ही था। पता नहीं विशाल को उसमें क्या अच्छा लगा! लेकिन इसमें तो ऐसा कुछ नहीं है कि मुझे अच्छा नहीं लगे या बोरियत हो पापा...प्ली...ज!"

पापा ने हँसकर पूछा, "अच्छा, और वे पियानो के क्लास जो पिछले साल अधूरे छोड़ दिए, और उससे पहले स्विमिंग और..." पापा का वाक्य पूरा हो उससे पहले ही मरुत बोला, "इस बार ऐसा कुछ नहीं होगा। मैं ये क्लास ज़रूर पूरे करूँगा। प्लीज़, प्लीज़, प्लीज़...!"

मम्मी हाथ ऊंचे करके रसोई में चली गई। पास वाले कमरे में बैठे हुए दादा जी ने ये सभी बातें सुनीं। वे धीरे से रूम के बाहर आए और मरुत के गाल पर हल्के से हाथ फिराकर बोले, "अरे मेरा बेटा, आ गया स्कूल से? आज तो बहुत उत्साह में दिख रहा है! चल, मेरे साथ पार्क में वॉक करने आएगा? तब तक तेरे मम्मी-पापा तेरी बात पर विचार भी कर लेंगे।"

दादा जी के साथ पार्क में जाना मरुत को बहुत अच्छा लगता था। वह तुरंत ही तैयार हो गया।

चलते-चलते दादा जी ने मरुत को बातों में लगाया, "मरुत, एक बात जानता है? मैं जब तेरी उम्र का था तब मुझे एक प्रॉब्लेम था।"

"क्या दादा जी?"

"मुझे भी तेरी तरह दोस्तों के साथ खेलना, घूमना, नाटक देखने जाना, बहुत अच्छा लगता था। लेकिन जब कोई भी मनपसंद एक्टिविटी शुरू करता, तब मैं सोचता कि यह पूरी हो जाएगी फिर क्या? और यह सोचते ही मेरा सारा मजा खत्म हो जाता।"

जैसे एकदम कुछ समझ में आ गया हो वैसे मरुत बोला, "हाँ, यही तो मेरा प्रॉब्लेम है। लेकिन उसका उपाय

क्या है दादा जी?"

दादा जी मुस्कराए। तालाब के पास एक बेंच की तरफ इशारा करते हुए बोले, "जा, वहाँ जाकर बैठ। मैं गरमा-गरम मसाले दार भुट्टा लेकर आता हूँ। फिर हम शांति से बातें करेंगे।"

बेंच पर बैठा-बैठा मरुत सामने वाली बेंच पर एक छोटे बच्चे को देख रहा था। पाँच-छः महीने का यह बच्चा ट्रॉली में हाथ-पैर हिलाकर अपने आप ही खेल रहा था। भांति-भांति की हुँकार और विचित्र आवाज़ें निकालकर अपनी मस्ती में हँस रहा था।

तभी दादा जी ने आकर मरुत के हाथ में भुट्टा दिया और उसके पास बैठ गए। हँसते खेलते बच्चे को देखकर दादा जी बोले, "यह बच्चा कितने मज़े से खेल रहा है। इसे मज़ा करने के लिए किसी की ज़रूरत है?"

बच्चे से नज़र हटाए बिना ही मरुत ने जवाब दिया। "सच, दादा जी! ऐसे छोटे बच्चे तो हमेशा खुश ही रहते हैं। भूख लगे, पेट में दुखे या कुछ भी तकलीफ हो तभी रोते हैं।"

तभी एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई। करीब तीन साल के उस बच्चे की तरफ नज़र करके, दादाजी बोले, "अरे, अभी तो वह मज़ेदार आइसक्रीम खा रहा था। और इतनी ही देर में रोने लगा!"

मरुत ने हँसते हुए कहा, "वह तो आइसक्रीम की वज़ह से खुश था न! आइसक्रीम पूरा हो गया इसलिए रोना आ गया।"

"ठीक कहते हो, बेटा" दादा जी ने मरुत की पीठ थपथपाई।

मरुत थोड़ा मुस्कराया। कितने दिन बाद आज मरुत दादा जी के साथ पार्क में सर्दियों की सुहानी धूप का मज़ा ले रहा था। तभी एक ठंडी हँवा का झोंका आया और फूलों की सुगंध से वातावरण महक उठा। दादा जी ने एक गहरी साँस ली। मरुत ने उनके चेहरे पर एक अनोखा

जो खुद अंदर से आनंदित होता है वही तो औरों को आनंद बाँट सकता है। ठीक है न?

आनंद देखा।

मरुत को आश्चर्य हुआ, "क्या हुआ दादा जी?"

दादा जी ने कहा, "इस मज़ेदार सुगंध से मुझे उस कस्तूरी मृग की याद आ गई।"

मरुत ने पूछा, "कस्तूरी मृग?"

"हाँ, कस्तूरी मृग। कस्तूरी की सुगंध से आकर्षित होकर, उस सुगंध की खोज में वह वन और जंगलों में भटकता रहता। उसे यह पता ही नहीं था कि, जिस सुगंध की खोज में वह भटक रहा है, वह मूल्यवान कस्तूरी, उसके अंदर उसकी नाभि में ही है।"

मरुत बहुत विचारशील था। दादा जी की बात में उसे रुचि हुई।

"देखो न, हमारा जीवन भी उस मृग जैसा ही है न! बाहर की चीज़ों में हम सुख ढूँढते हैं। कभी लगता है कि आइसक्रीम में से सुख मिलेगा, तो कभी टी.वी. से। लेकिन जिन चीज़ों के आधार से हम सुख लेने जाते हैं, वे सभी टेम्परेरी होने से हमें सुख भी टेम्परेरी ही मिलता है। देखा न, आइसक्रीम खत्म हो गई तो उस बच्चे को कैसा रोना आ गया! जैसे, कस्तूरी की सुगंध, उसकी नाभि में ही होती है, वैसे ही हमारा सच्चा सुख, सच्चा आनंद बाहर कहीं नहीं है बल्कि हमारे अंदर ही है!"

मरुत को दादा जी की बात समझ में आ रही थी, "इसलिए दादा जी जैसे वह छोटा बच्चा किसी भी कारण बिना खुश था, वैसे ही हम भी खुश रहें तो वही सच्चा आनंद कहा जाता है?"

"हाँ, बेटा", दादा जी ने प्रेम से मरुत के सिर पर हाथ फिराया।

घर जाकर मरुत ने कहा, "मम्मी, पापा आप जो डिसाइड करेंगे वो मुझे अच्छा लगेगा।" पहली बार मम्मी-पापा ने मरुत को आज बिना वजह इतना खुश देखा था।

उसके बाद मरुत बहुत आनंद में रहने लगा। बोर होना तो जैसे वह भूल ही गया। वह इतना खुश रहता कि उसके साथ से औरों को भी आनंद आता। सही ही बात है न! जो खुद अंदर से आनंदित होता है वही तो औरों को आनंद बाँट सकता है। ठीक है न?

१

रस्ता ढूँढिए

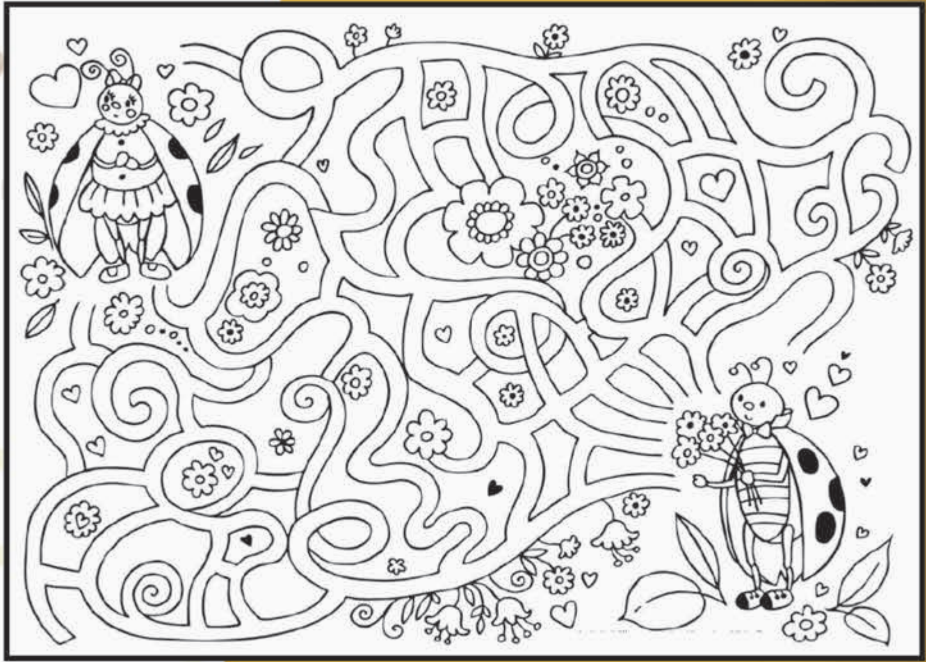

चलो खेलें...

२

नीचे दिए गए स्पेलिंग को बाजु में दिए हुए बॉक्स में ढूँढिए।

b	o	o	t	i	e	s	i	g
b	a	h	u	v	a	q	n	o
a	h	i	p	p	o	m	e	e
s	t	e	k	c	i	r	c	l
m	e	f	i	n	g	e	r	c
d	r	a	g	o	n	w	v	y
i	b	r	i	d	g	e	l	c
z	m	d	s	a	n	w	s	i
l	p	f	o	r	e	s	t	b

Hippo,
Bridge,
Forest,
drangon,
Bicycle,
Cricket,
Booties

३ सुडोकु पूर्ण कीजिए

4	7	1	6	3	5		9	
		8		7			3	6
6	5			9		4		
1				4	2	7		9
5		4		6		3	1	2
	9	2	8		3			5
		7		2			5	3
3	4	5		8	6	1		
	1		3		7	8	6	4

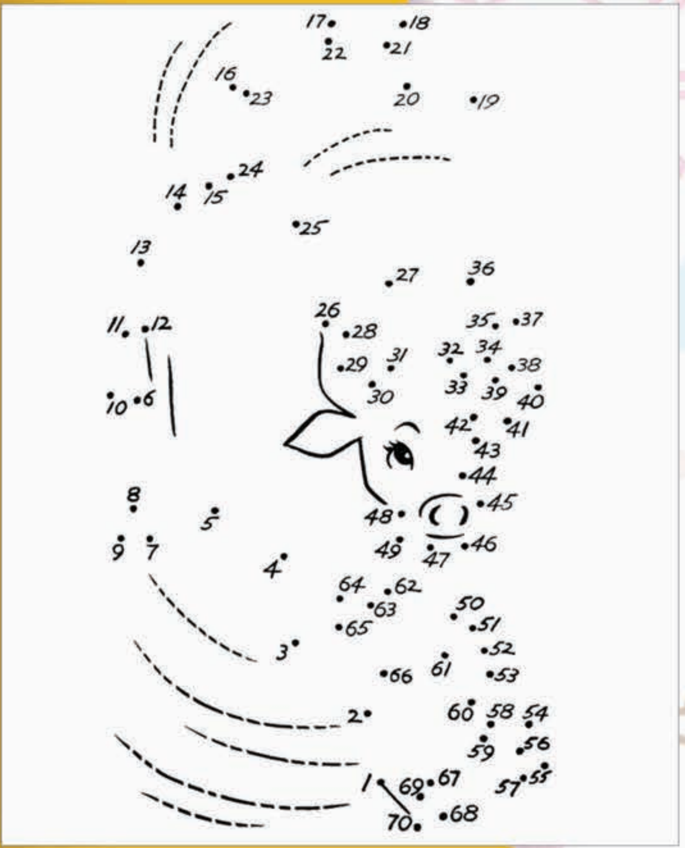

बाजु में दिए गए चित्र में बिंदुओं को जोड़कर चित्र पूर्ण कीजिए ४

प्रष्ट चंपारण अत्यंत समृद्ध नगर था। उस नगर के राजा शाल नीतिपरायण और धर्म प्रेमी राजा थे। उनके प्रजाप्रेम की सुगंध चारो तरफ फैली हुई थी। राजा शाल ने अपने छोटे भाई महाशाल को युवराज बना दिया था। प्रजा उन दोनों भाई के राज्य में हर तरह से सुखी और आबाद थी।

उस समय भगवान महावीर अलग-अलग क्षेत्रों में विचरण करके देशना दे रहे थे। जिस क्षेत्र पर प्रभु के कदम पड़ते, वह क्षेत्र पावन हो जाता।

एक दिन राजा शाल को समाचार मिले, "भगवान महावीर अपने नगर के बगीचे में पधारे हुए हैं।"

यह शुभ समाचार सुनकर राजा शाल आनंदविभोर हो गए। राजा शाल ने भगवान महावीर की आत्मसाधना की बहुत सारी बातें सुनी थीं। आज उनके प्रत्यक्ष दर्शन का अमूल्य अवसर आया था। अपने छोटे भाई और राज परिवार के साथ राजा शाल प्रभु के चरण में आकर बैठ गए।

राजा शाल को प्रभु देशना का एक-एक क्षण राज वैभव के सुख से अनेक गुना ज्यादा लगा। प्रभु की वाणी का एक-एक शब्द राजा शाल के अंतर में बस गया। पूरे जीवन में राजा शाल ने इतना आनंद नहीं चखा था, जितना आज प्रभु की देशना में चखा। उनका मन किसी नई चीज़ की खोज के लिए तत्पर होने लगा।

प्रभु की देशना पूरी होने के बाद शाल ने अपने छोटे भाई महाशाल से कहा, भाई, तुम युवराज हो! तुम राज्य चलाने के लिए सर्वथा योग्य हो। तुम ये राज्यभार संभाल लो और मुझे प्रभु के चरणों में बैठने दो।"

प्रभु के चरणों में अनुभव होने वाले आनंद के सामने अपार संपत्ति और राज वैभव भी फीका था। युवराज महाशाल भी राजा शाल के ही भाई थे! प्रभु की देशना सुनने के बाद, उनका मन भी संयम के मार्ग पर प्रयाण करने के लिए तरस रहा था। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा, "भाई, जो राज्य, जो वैभव और जो संपत्ति आपको त्यागने लायक लग रही हो उसे स्वीकार करके मैं क्या करूँगा? जिस मार्ग पर आप सुखी होने जा रहे हो, उसी मार्ग पर मुझे भी सुखी होना है। मैं भी आपके साथ ही रहूँगा। जहाँ आप वहाँ आपका यह सेवक।" छोटे भाई की ऐसी भावना सुनकर, राजा शाल अवाक् हो गए। अपने छोटे भाई की भावना स्वीकारने के सिवाय कोई चारा ही नहीं था।

यहाँ तो राज्य प्राप्त करने की नहीं राज्य छोड़ने की स्पर्धा चल रही थी। और इस स्पर्धा में किसी का भी पराजय नहीं, बल्कि दोनों का महा विजय

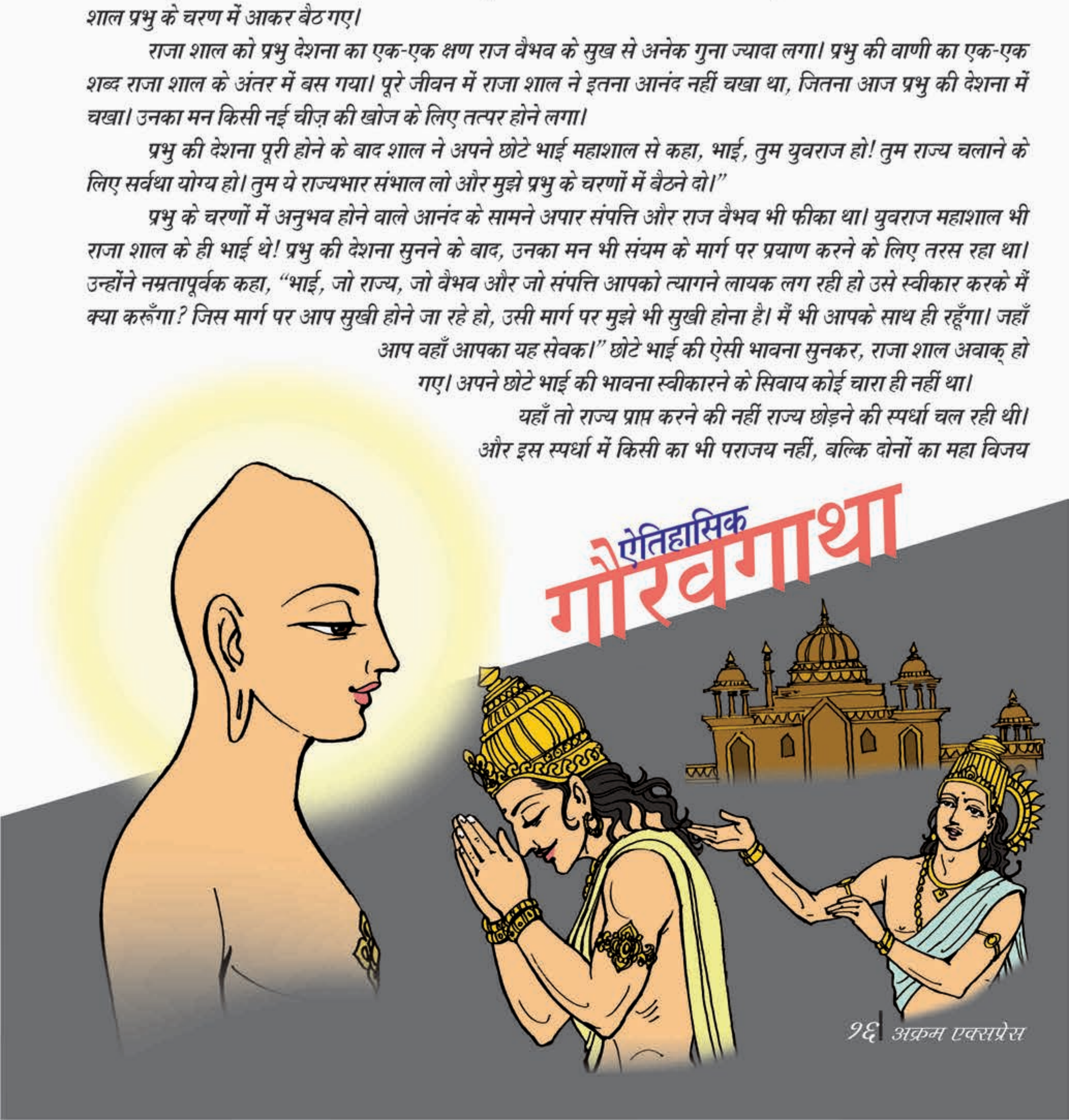

होने वाला था। अंत में तय हुआ कि पृष्ट चंपानगरी का राज्य शाल और महाशाल के भांजे, गांगिल को सौंपा जाए।

अपने भांजे को राज्यभार सौंपकर, दोनों भाई राज्यभार की चिंता से मुक्त हुए और प्रभु के पदचिन्हों पर चल पड़े। वे प्रभु के मुनि मंडल में शामिल हो गए। प्रभु की देशना में जो ज्ञान सुना था, वह उन्हें अनुभव में आने लगा, प्रतिदिन उनका आनंद बढ़ता ही गया। प्रभु के सानिध्य में उन्होंने आत्मा का सच्चा सुख चखा।

एक दिन शाल और महाशाल मुनि ने सोचा, "हम तो छूट गए, लेकिन हमारा भानजा गांगिल, हमारे ही कहने से और भी फंस गया, उसका क्या? मामा के हाथ से भानजे का ऐसा अकल्याण? हमारी आत्मसाधना तभी सफल होगी जब हम अपने स्वजनों को कल्याण मार्ग बताएँगे और अपने इस आनंद के अनुभव का भागीदार बनाएँगे।"

शाल और महाशाल मुनियों ने भगवान से विनती की, "प्रभु आपने जिस तरह हमारा कल्याण किया, उसी तरह हमारे लिए मायाजाल में फँसे हुए गांगिल और अन्य स्वजनों का भी कल्याण हो ऐसी कृपा कीजिए।" भगवान महावीर ने गणधर गौतम को गांगिल और उनके माता-पिता को प्रतिबोध करने जाने की आज्ञा की।

श्री गौतम गणधर, शाल-महाशाल मुनि के साथ गांगिल को प्रतिबोधन करने के लिए राजगृही से पृष्ट चंपानगरी में आए। प्रभु के परम भक्त, गणधर गौतम ने सभी को प्रतिबोध करके, आत्ममार्ग का उपासक बनाया। क्षण पहले का राजा

गांगिल अपने माता-पिता के साथ मुनिवेश धारण करके, प्रभु चरण में शरण लेने के लिए चल पड़े।

जिस मामा के स्नेह ने गांगिल को अपार राज्य के वैभव का स्वामी बनाया था, उसी मामा के स्नेह ने उन्हें अनंत आत्म वैभव का मार्ग दिखाया।

रास्ते में चलते हुए सभी के मन गुरु गौतम के उपदेश का स्मरण करने में लीन हो गए। सभी अंतरमुख हो गए थे। तीव्र भावना के फल स्वरूप, मुनि शाल-महाशाल, गांगिल और उनके माता-पिता को मार्ग में ही केवलज्ञान प्राप्त हो गया। जैसे सूर्यदेव सोलह कलाओं से खिल उठते हैं, उसी तरह उनका आत्मा भी पूरी तरह से खिल उठा। उस समय के आनंद का वर्णन भी संभव नहीं है।

प्रभु के पास आकर, गौतम स्वामी ने प्रदक्षिणा की और पाँच धर्मात्माओं से भी प्रभु की प्रदक्षिणा करने के लिए कहा। तब प्रभु ने गौतम से कहा, "हे गौतम, इन पाँचों को केवलज्ञान हुआ है, उनका विनय करो।"

सरलता और नम्रता की मूर्ति गुरु गौतम स्वामी ने नत मस्तक होकर उनसे क्षमा माँगी और उनका विनय किया।

देवताओं ने महोत्सव किया। मानव वृंद उन पुण्यात्माओं का वंदन कर रहा था।

और इस तरह, शाश्वत आनंद प्राप्त करके, स्वजनों को भी वह आनंद प्राप्त करवाने वाली यह कथा अमर हो गई।

लोना वाला का एक सत्संग याद है। महात्माओं नीरू माँ के साथ लोना वाला पिकनिक पर गए थे। कच्छी सेनेटोरियम में सभी का आवास और पास के होटल में सत्संग था।

वहाँ पहुँचकर आराम करने के बाद सत्संग था। सभी महात्मा सत्संग हॉल में पहुँच गए थे। सत्संग हॉल की चौड़ाई बहुत कम थी और लंबाई ज्यादा थी। नीरू माँ सभी को दिखें इसलिए दो टेबल पर उनका सोफा रखना था। और नीरू माँ के लिए दो टेबल पर सोफा रखना था। थोड़ी देर में नीरू माँ आ गए।

टेबल पर सोफा नहीं रखा था। नीरू माँ को आते देखकर सोफा तो फटाफट रख दिया। लेकिन टेबल इतने ऊँचे, करीब तीन फुट ऊँचे, अतः नीरू माँ सोफे पर ऐसे ही बैठ नहीं सकते थे।

कोर्डिनेटर महात्मा ने आवाज़ लगाई, नीरू माँ को चढ़ने के लिए कुर्सी लाओ।

यह सुनते ही नीरू माँ ने उन्हें पीछे से हल्की सी चपत मारी कि "शोर क्यों मचा रहे हो? घोड़ा बन जाओ न। कुर्सी की कहाँ ज़रूरत है।"

कोर्डिनेटर महात्मा घुटनों पर खड़े हो गए। नीरू माँ आराम से उनकी पीठ पर खड़े हो गए। दो-तीन मिनट असीम जय जयकार किया।

फिर नीरू माँ टेबल पर चढ़ गए और उन भाई से खड़े हो जाने के लिए कहा। और कहा "यह हमारी तुम्हें लाइफ टाइम गिफ्ट है।"

कोर्डिनेटर महात्मा भाई तो गद्‌गद्‌ हो गए।

ज्ञानिओं का हँसी-मज़ाक, महात्माओं के लिए अहोभाव का कारण बन जाता है।

मीठी यादें

अडालज में कल्चरल प्रोग्रैम द्वारा जन्माष्टी मनाई गई...

Akram Express
September 2017
Year : 5, Issue : 6
Conti. Issue No.: 54

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

BMHT द्वारा जन्माष्टमी मनाई गई...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published